हिन्दी, कक्षा–2 के लिए सीखने–सिखाने सम्बंधी अपेक्षाएँ
(अधिगम परिणाम/लर्निंग आउटकम)

बच्चे –

- विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे– जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि।
- कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं।
- देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनायी जा रही सामग्री, जैसे– कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं।
- भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल का मज़ा लेते हुए लय और तुक वाले शब्द बनाते हैं, जैसे–एक था पहाड़, उसका भाई था दहाड़, दोनों गए खेलने ….।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/ सुनाते हैं/आगे बढ़ाते हैं।
- अपने स्तर और पसंद के अनुसार कहानी, कविता, चित्र, पोस्टर आदि को आनंद के साथ पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।
- चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।
- चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग–अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।
- परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे– चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर–ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।
- प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा को समझते हैं, जैसे– 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं?/ 'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन–कौन से अक्षर हैं?
- हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।
- स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अतंर्गत चित्रों, आड़ी–तिरछी रेखाओं (कीरम–काँटे), अक्षर–आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व–वर्तनी का उपयोग और स्व–नियंत्रित लेखन (कनवैंनशनल राइटिंग) करते हैं।
- सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह–तरह से चित्रों/शब्दों/वाक्यों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं।
- अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर आधारित अनभुवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि आगे बढ़ाते हैं।

कक्षा–2	अंकुर		हिन्दी
क्रम संख्या	पाठ	दिवस	दिन
1.	हँसते–खेलते	01–10	10
2.	चित्रपठन	11–13	03
3.	कौआ और लोमड़ी (चित्रपठन)	14–18	05
4.	नानी तेरी मोरनी (कविता)	19–24	05
5.	प्रभु मेरा जीवन हो सुंदर (प्रार्थना)	25–28	04
6.	पुनरावर्तन	29–31	03
7.	प्यासा कौआ (चित्रकथा)	32–37	06
8.	दो बकरियाँ (कहानी)	38–46	09
9.	बहुत हुआ (कविता)	47–52	06
10.	भालू ने खेली फुटबॉल (कहानी)	53–63	11
11.	पुनरावर्त्तन	64–67	05
12.	किसान, आलू और भालू (कहानी)	68–78	11
13.	अगर पेड़ भी चलते होते (कविता)	79–84	06
14.	हाँ जी हाँ, ना जी ना (कविता)	85–90	06
15.	पुनरावर्तन	91–98	08
16.	कितने कौए (कहानी)	99–107	08
17.	चूँ–चूँ की टोपी (एकांकी)	108–116	09
18.	मेला (कविता)	117–125	09
19.	निशा की चिट्ठी (पत्र)	126–134	09
20.	पुनरावर्तन	135–138	04
21.	होली (कविता)	139–147	09
22.	बंदर और टोपी (कहानी)	148–156	09
23.	पहेलियाँ (कविता)	157–164	08
24.	इच्छा (कविता)	165–173	09
25.	पुनरावर्तन	174–180	07